

(1) द्वंद्व का लक्षण एवं इसके अंग ?

उत्तर- अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रा गणना एवं यति-गति से सम्बद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्य-रचना 'द्वंद्व' कहलाती है। तुक द्वंद्व का प्राण है। यह हमारी आनंद-भावना को प्रेरित करती है।

द्वंद्व के निम्नलिखित अंग हैं-

(i) पाद - पाद को चरण कहते हैं। छंदशास्त्र में पाद का अर्थ कंद का चतुर्थ भाग है। द्वंद्वों के प्रायः चार चरण होते हैं।

(ii) मात्रा एवं वर्ण - दो प्रकार के स्वर हैं - ह्रस्व और दीर्घ। दीर्घ स्वर वाले वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व से दूना समय लगता है। छंदशास्त्र में ह्रस्व - दीर्घ को मात्रा कहा जाता है।

(iii) लघु और गुरु - छंदशास्त्र में ह्रस्व को लघु और दीर्घ को गुरु कहते हैं। दीर्घाक्षर को गुरु कहते हैं, जिसका चिह्न 5 है, ह्रस्व को लघु कहते हैं, जिसका चिह्न 1 है।

(iv) संख्या और क्रम - मात्राओं और वर्णों की गणना को संख्या।

और लघु-गुरु के स्थान-निर्धारण
को क्रम कहते हैं।

(V) गण — मात्राओं और वर्णों की
संख्या और क्रम की सुविधा के
लिए तीन वर्णों का एक-एक गण
मान लिया गया है। इन गणों की
संख्या आठ है। इन गणों के नाम
और उदाहरण इस प्रकार हैं —

① यगण — बहाना

गण — उदाहरण

(I) यगण — बहाना

(II) मगण — आजादी

(III) तगण — बाजार

(IV) रगण — नीरस नीरज

(V) जगण — प्रभाव

(VI) भगण — नीरद

(VII) नगण — कमल

(VIII) सगण — कसुधा

(VI) यति — द्दशास्त्र में यति
का अर्थ विराम या विश्राम होता
है।

(VII) गति — द्दशास्त्र में गति का
अर्थ लय या प्रवाह होता है।

(VIII) तुक — अनन्य वर्णों की
आवृत्ति को 'तुक' कहा जाता है।